

HINDI FILE



**DREAM**  
FOR NATION



**DARE**  
TO SERVE



**DELIVER**  
WITH INTEGRITY

# DAILY PRACTICE QUESTIONS

**BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM**

DATE : **JULY 13, 2026**



Comprehensive  
Coverage



Exam-Focused  
Analysis



Concept Clarity  
& Insights



Practice MCQs  
with Explanation



Daily Updates,  
Better Results



**CONTACT INFO:**

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



**EMAIL ID:**

info@sixsigmaias.com



**WEB PAGE:**

www.sixsigmaias.com



**ADDRESS:**

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,  
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

## दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

1. भारतीय कांस्य मूर्तिकला परंपराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. शास्त्रीय भारतीय कांस्य ढलाई में उपयोग की जाने वाली लुप्त-मोम (lost-wax) तकनीक आम तौर पर समान मूर्तियाँ बनाने के लिए एक ही साँचे के बार-बार उपयोग की अनुमति देती है।
2. चोल कांस्य मूर्तियाँ, विशेष रूप से नटराज रूप, प्रतीकात्मक रूप से कलात्मक गतिशीलता के साथ आध्यात्मिक विचारों को एकीकृत करती हैं।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) कोई भी कथन नहीं
- (b) केवल एक कथन
- (c) दोनों कथन
- (d) किसी भी कथन का निर्णायक रूप से मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** लुप्त-मोम (सिरे पेईयू) विधि में, ढलाई के बाद साँचे को आमतौर पर नष्ट कर दिया जाता है; इसलिए, प्रत्येक कांस्य मूर्ति अद्वितीय होती है और सामान्यतः एक ही साँचे का दोबारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- **कथन 2 सही है:** चोल कांस्य, विशेष रूप से नटराज, कलात्मक उत्कृष्टता को दार्शनिक प्रतीकवाद के साथ जोड़ते हैं—जहाँ ब्रह्मांडीय नृत्य के माध्यम से सृजन, संरक्षण और विनाश को दर्शाया गया है।
  - इसलिए, केवल एक कथन सही है।

2. निम्नलिखित में से कौन सी एक इन-सिटु (स्व-स्थाने) संरक्षण रणनीति की सबसे उपयुक्त विशेषता है?

- (a) प्रजातियों का उनके प्राकृतिक आवास के भीतर संरक्षण
- (b) केवल बंधक प्रजनन (captive breeding) के माध्यम से लुप्तप्राय प्रजातियों का संरक्षण
- (c) नियंत्रित परिस्थितियों में बीजों और ऊतकों का दीर्घकालिक भंडारण
- (d) वानस्पतिक और प्राणी उद्यानों (botanical and zoological facilities) में प्रजातियों का कृत्रिम गुणन

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **इन-सिटु (स्व-स्थाने) संरक्षण:** इसका तात्पर्य जीवों को उनके प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र के भीतर ही सुरक्षा प्रदान करने से है—उदाहरण के लिए, बायोस्फीयर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभ्यारण्य।
- **अन्य विकल्प:** विकल्प (b), (c) और (d) एक्स-सिटु (बाह्य-स्थाने) संरक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ प्राकृतिक आवास से बाहर बंधक प्रजनन, बीज बैंकों या नियंत्रित सुविधाओं के माध्यम से संरक्षण किया जाता है।

3. बेरोजगारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रच्छन्न (Disguised) बेरोजगारी तब भी मौजूद हो सकती है जब कुछ श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता (marginal productivity) लगभग शून्य हो।
2. मौसमी बेरोजगारी केवल कृषि में होती है और अन्य क्षेत्रों में उत्पन्न नहीं हो सकती।
3. संरचनात्मक (Structural) बेरोजगारी कौशल और रोजगार के अवसरों के बीच बेमेल (mismatch) से जुड़ी है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) सभी तीन
- (c) केवल दो
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** प्रच्छन्न बेरोजगारी में, यदि कुछ श्रमिकों को हटा भी दिया जाए, तो कुल उत्पादन में कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आती है; इसलिए उनकी सीमांत उत्पादकता नगण्य या शून्य हो सकती है।
- **कथन 2 गलत है:** मौसमी बेरोजगारी केवल कृषि तक ही सीमित नहीं है; यह पर्यटन, निर्माण और अन्य मौसम-निर्भर क्षेत्रों में भी उत्पन्न हो सकती है।
- **कथन 3 सही है:** संरचनात्मक बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में आने वाले उन बदलावों के कारण होती है, जिनकी वजह से श्रमिकों के कौशल और उपलब्ध नौकरियों के बीच बेमेल की स्थिति पैदा हो जाती है।
  - इसलिए, दो कथन सही हैं।

#### 4. भारत में विधायी प्रक्रियाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक साधारण विधेयक (Ordinary Bill) संसद के किसी भी सदन में उत्पन्न हो सकता है।
2. एक धन विधेयक (Money Bill) राष्ट्रपति की पूर्व स्वीकृति से राज्यसभा में पेश किया जा सकता है।
3. संसद की संयुक्त बैठक (joint sitting) की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष द्वारा की जाती है।
4. दोनों सदनों के बीच असहमति के मामले में संविधान संशोधन विधेयक को संसद की संयुक्त बैठक के माध्यम से हल किया जा सकता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** साधारण विधेयक संसद के किसी भी सदन में पेश किए जा सकते हैं।
- **कथन 2 गलत है:** धन विधेयक केवल लोकसभा में ही पेश किया जा सकता है।
- **कथन 3 सही है:** संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा अध्यक्ष द्वारा की जाती है।
- **कथन 4 गलत है:** संविधान संशोधन विधेयक संयुक्त बैठक के दायरे में नहीं आते हैं; प्रत्येक सदन को इन्हें आवश्यक बहुमत के साथ अलग-अलग पारित करना होता है।
  - अतः, केवल दो कथन सही हैं।

#### 5. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

**कथन (A):** उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी वाले क्षेत्रों में हमेशा सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व होता है।

**कारण 1 (R1):** उपजाऊ मिट्टी कृषि उत्पादकता को बढ़ाती है और बस्तियों के संकेंद्रण (concentration) को प्रोत्साहित कर सकती है।

**कारण 2 (R2):** औद्योगिकीकरण, परिवहन संपर्क और शहरी आर्थिक अवसर भी जनसंख्या के संकेंद्रण को दृढ़ता से प्रभावित कर सकते हैं।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

- (a) कथन सही है और R1 और R2 दोनों कथन की सही व्याख्या हैं
- (b) कथन सही है, लेकिन R1 और R2 में से केवल एक ही सही व्याख्या है
- (c) कथन गलत है, लेकिन R1 और R2 दोनों सही हैं
- (d) कथन सही है, लेकिन न तो R1 और न ही R2 इसकी सही व्याख्या है

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन (A) गलत है:** क्योंकि उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी वाले क्षेत्रों में हमेशा ही सबसे अधिक जनसंख्या घनत्व हो, ऐसा अनिवार्य नहीं है। यद्यपि उपजाऊ मैदान अक्सर घनी आबादी को आकर्षित करते हैं, फिर भी कई अत्यधिक आबादी वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का संकेंद्रण औद्योगिकीकरण, व्यापार, सेवाओं और शहरीकरण के कारण होता है।
- **कारण 1 (R1) सही है:** क्योंकि उपजाऊ मिट्टी कृषि और मानव बस्तियों को बढ़ावा देती है।
- **कारण 2 (R2) भी सही है:** क्योंकि आर्थिक अवसर, परिवहन नेटवर्क और शहरी विकास जनसंख्या संकेंद्रण के प्रमुख निर्धारक कारक हैं।
  - इसलिए, कथन गलत है लेकिन दोनों कारण सही हैं।

SIXSIGMA IAS  
Dream | Dare | Deliver

## दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

1. हंतावायरस (Hantavirus) संक्रमण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हंतावायरस मुख्य रूप से संक्रमित कृंतकों (rodents - जैसे चूहे) के मलमूत्र और एरोसोल (हवा में मौजूद कणों) के संपर्क में आने से मनुष्यों में फैलता है।
2. सभी ज्ञात हंतावायरस प्रजातियों के लिए मानव-से-मानव संचरण (human-to-human transmission) प्रसार का प्रमुख माध्यम है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों कथन
- (c) दोनों में से कोई नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** हंतावायरस आमतौर पर संक्रमित कृतकों के संपर्क के माध्यम से फैलता है, विशेष रूप से उनके मूत्र, लार और मलमूत्र के जरिए जो हवा में मिलकर एरोसोल का रूप ले लेते हैं।
- **कथन 2 गलत है:** मानव-से-मानव संचरण सभी हंतावायरस के लिए प्रमुख मार्ग नहीं है। अधिकांश हंतावायरस कृतकों के माध्यम से ही फैलते हैं। सीमित मानव-से-मानव संचरण की रिपोर्ट केवल कुछ विशिष्ट उपभेदों (strains) जैसे एंडीज वायरस (Andes virus) में देखी गई है।
  - अतः, केवल एक कथन सही है।

**2. चिकित्सा और नैतिक चर्चाओं में हाल ही में देखे गए 'एप्निया टेस्ट' (The Apnoea Test) के संदर्भ में, निम्नलिखित पर विचार कीजिए:**

यह परीक्षण मुख्य रूप से किसलिए आयोजित किया जाता है?

- (a) ऑक्सीजन प्रसार क्षमता के माध्यम से पल्मोनरी फाइब्रोसिस का आकलन करना
- (b) ब्रेन-स्टेम डेथ (मस्तिष्क-स्तंभ मृत्यु) मूल्यांकन के हिस्से के रूप में न्यूरोलॉजिकल प्रतिक्रिया का निर्धारण करना
- (c) रात भर की निगरानी के माध्यम से ऑब्स्ट्रक्टिव स्लीप एप्निया का निदान करना
- (d) सहायक वेंटिलेशन के दौरान हृदय गति की असामान्यताओं का मूल्यांकन करना

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **एप्निया टेस्ट (The Apnoea Test):** यह ब्रेन-स्टेम डेथ (मस्तिष्क-स्तंभ मृत्यु) के निर्धारण में एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। इस परीक्षण के दौरान, ऑक्सीजन की आपूर्ति बनाए रखते हुए वेंटिलेटर सपोर्ट को अस्थायी रूप से समाप्त किया जाता है, ताकि यह आकलित किया जा सके कि कार्बन डाइऑक्साइड ( $CO_2$ ) का स्तर बढ़ने पर रोगी स्वतः सांस लेना शुरू करता है या नहीं।
- **परिणाम:** बढ़ा हुआ  $CO_2$  स्तर होने के बावजूद यदि श्वसन का कोई प्रयास नहीं दिखता, तो यह ब्रेन-स्टेम के श्वसन कार्य की समाप्ति की पुष्टि करता है।
- **अन्य विकल्प:** विकल्प (a), (c) और (d) विभिन्न अन्य चिकित्सा मूल्यांकनों से संबंधित हैं और इनका ब्रेन-डेथ एप्निया टेस्ट से कोई संबंध नहीं है।

**3. भारत में गर्भ का चिकित्सा समापन (संशोधन) अधिनियम (MTP Act) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. संशोधित कानूनी ढांचा किसी भी वयस्क महिला के केवल अनुरोध पर, बिना किसी चिकित्सीय राय के 20 सप्ताह तक के गर्भ को समाप्त करने की अनुमति देता है।
2. महिलाओं की कुछ श्रेणियां निर्धारित चिकित्सीय राय के अधीन 24 सप्ताह तक के गर्भ समापन की मांग कर सकती हैं।

3. गर्भ समापन कराने वाली महिला की पहचान और विवरण का प्रकटीकरण कानून के तहत आम तौर पर प्रतिबंधित है, सिवाय कानूनी रूप से अधिकृत परिस्थितियों के।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) सभी तीन
- (c) केवल दो
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है:** MTP ढांचे के तहत गर्भ का समापन बिना किसी चिकित्सीय राय के केवल महिला के एकतरफा अनुरोध पर आधारित नहीं होता है। इसकी वैधता के लिए पंजीकृत चिकित्सा चिकित्सकों (medical practitioners) की राय होना अनिवार्य है।
- **कथन 2 सही है:** संशोधित व्यवस्था विशिष्ट श्रेणियों (जैसे यौन उत्पीड़न की शिकार महिलाओं, नाबालिगों और अन्य अधिसूचित श्रेणियों) को कुछ चिकित्सीय शर्तों और राय के अधीन 24 सप्ताह तक गर्भ समापन की अनुमति देती है।
- **कथन 3 सही है:** गोपनीयता के प्रावधान कानूनी रूप से अधिकृत व्यक्तियों के अलावा किसी भी अन्य व्यक्ति को महिला की पहचान उजागर करने से प्रतिबंधित करते हैं।
  - इसलिए, दो कथन सही हैं।

4. आदर्श आचार संहिता (Model Code of Conduct - MCC) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चुनाव आयोग द्वारा चुनाव कार्यक्रम (शेड्यूल) की घोषणा के तुरंत बाद आदर्श आचार संहिता लागू हो जाती है।
2. आदर्श आचार संहिता जनप्रतिनिधित्व अधिनियम के तहत संसद द्वारा अधिनियमित एक वैधानिक संहिता (statutory code) है।
3. आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन स्वतः ही किसी उम्मीदवार को अयोग्य घोषित कर देता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) कोई नहीं
- (c) सभी तीन
- (d) केवल दो

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** आदर्श आचार संहिता (MCC) उस तारीख से प्रभावी हो जाती है जिस दिन चुनाव आयोग चुनाव के कार्यक्रम की घोषणा करता है।
- **कथन 2 गलत है:** MCC संसद द्वारा अधिनियमित कोई वैधानिक कानून नहीं है; यह एक सर्वसम्मति से विकसित कोड है जिसे चुनाव आयोग द्वारा लागू किया जाता है।
- **कथन 3 गलत है:** MCC के उल्लंघन से कोई स्वतः अयोग्य नहीं हो जाता। कार्रवाई उल्लंघन की प्रकृति पर निर्भर करती है, जिसमें चेतावनी, प्राथमिकी (FIR), निंदा या प्रासंगिक कानूनों के तहत अदालती कार्यवाही शामिल हो सकती है।

- अतः, केवल एक कथन सही है।

#### 5. प्रोजेक्ट दीपक (Project Deepak) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. प्रोजेक्ट दीपक, सीमा सड़क संगठन (BRO) के तहत काम करने वाली परियोजनाओं में से एक है।
2. यह मुख्य रूप से पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र के कुछ हिस्सों में रणनीतिक सड़कों के निर्माण और रखरखाव से जुड़ा है।
3. यह परियोजना विशेष रूप से पाकिस्तान की सीमा से लगे क्षेत्रों में काम करती है और आंतरिक हिमालयी संपर्क (connectivity) में इसकी कोई भूमिका नहीं है।
4. BRO के तहत रणनीतिक सड़क परियोजनाओं का सैन्य और सामाजिक-आर्थिक दोनों महत्व हो सकता है।

उपरोक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी चार
- (d) केवल तीन

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है:** प्रोजेक्ट दीपक सीमा सड़क संगठन (BRO) की ही एक परियोजना है।
- **कथन 2 सही है:** ऐतिहासिक रूप से यह पश्चिमी हिमालयी क्षेत्र, विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश और उससे सटे रणनीतिक क्षेत्रों में सड़क बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़ी रही है।
- **कथन 3 गलत है:** BRO की परियोजनाएं केवल तत्काल अंतरराष्ट्रीय सीमा पट्टियों तक ही सीमित नहीं होती हैं; वे आंतरिक और रणनीतिक संपर्क को भी मजबूत करती हैं।
- **कथन 4 सही है:** ऐसी सड़कें रक्षा रसद (defence logistics) और नागरिक उद्देश्यों (जिसमें पर्यटन, व्यापार, आपदा प्रबंधन और क्षेत्रीय विकास शामिल हैं) दोनों के लिए उपयोगी होती हैं।

- अतः, तीन कथन सही हैं।

#### 6. निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए:

1. मनाली
2. रोहतांग क्षेत्र
3. शिमला क्षेत्र
4. लेह

उपरोक्त में से कौन से क्षेत्र BRO के 'प्रोजेक्ट दीपक' के परिचालन और रणनीतिक सड़क-विकास के दायरे से अधिक निकटता से जुड़े हैं?

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 and 4
- (c) 1, 2, 3 और 4
- (d) केवल 1 और 4

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **परियोजना का क्षेत्र:** BRO के प्रोजेक्ट दीपक को पारंपरिक रूप से हिमाचल प्रदेश में बुनियादी ढांचे के विकास से जोड़ा गया है, जिसमें मनाली, रोहतांग और शिमला क्षेत्र की कनेक्टिविटी से जुड़े रणनीतिक और पहाड़ी सड़क क्षेत्र शामिल हैं।
- **लेह की स्थिति:** यद्यपि लेह रणनीतिक रूप से हिमालयी सड़क नेटवर्क और BRO की गतिविधियों के माध्यम से जुड़ा हुआ है, लेकिन इसका मुख्य परिचालन संबंध विशेष रूप से प्रोजेक्ट दीपक के बजाय BRO की अन्य परियोजनाओं के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
  - इसलिए, सही उत्तर केवल 1, 2 और 3 है।

## दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

GS-1

- **स्रोत:** कक्षा 12 भूगोल – भारत: लोग और अर्थव्यवस्था
- **अध्याय 5:** भू-संसाधन तथा कृषि

**प्रश्न 1:** भारतीय कृषि के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए और भारत में सतत कृषि प्रथाओं (sustainable agricultural practices) की आवश्यकता का मूल्यांकन कीजिए।

**परिचय (Introduction)**

- भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में कृषि एक केंद्रीय स्थान रखती है। यह न केवल खाद्य सुरक्षा में योगदान देती है बल्कि लाखों ग्रामीण परिवारों की आजीविका का समर्थन भी करती है।
- तकनीकी प्रगति और नीतिगत हस्तक्षेपों के बावजूद, भारतीय कृषि लगातार कई संरचनात्मक, पर्यावरणीय और आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रही है। जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक क्षरण (ecological degradation) के कारण ये चुनौतियाँ और अधिक तीव्र हो गई हैं, जिससे सतत कृषि आज की एक महती आवश्यकता बन गई है।

**मुख्य भाग (Body)**

भारतीय कृषि के समक्ष कई परस्पर जुड़ी हुई समस्याएँ हैं जो उत्पादकता और किसान कल्याण दोनों को प्रभावित करती हैं:

- **जोतों का विखंडन (Fragmentation of Landholdings):**

- जनसंख्या वृद्धि और विरासत प्रथाओं के कारण, कृषि भूमि लगातार छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गई है।
- इसके परिणामस्वरूप पैमाने की किफ़ायत (economies of scale) कम हो जाती है और मशीनीकरण सीमित हो जाता है। छोटे और सीमांत किसान अक्सर आधुनिक तकनीकों को अपनाने में संघर्ष करते हैं और खेती के पारंपरिक तरीकों पर निर्भर रहते हैं।

- **मानसून वर्षा पर निर्भरता:**

- खेती योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा आज भी सुनिश्चित सिंचाई सुविधाओं से वंचित है।
- इसके कारण अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ सीधे तौर पर फसल उत्पादन और ग्रामीण आय को प्रभावित करते हैं। जलवायु परिवर्तन ने चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति बढ़ाकर और फसल चक्र को बदलकर इस संवेदनशीलता को और बढ़ा दिया है।

- **पारिस्थितिक क्षरण (Ecological Degradation):**

- हरित क्रांति ने निस्संदेह खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि की, लेकिन रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और भूजल दोहन पर इसकी अत्यधिक निर्भरता ने पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर दिया।
- कई क्षेत्रों में मिट्टी की उर्वरता कम हो गई है, भूजल स्तर गिर गया है और जैव विविधता को नुकसान पहुँचा है। अनुपयुक्त कृषि-जलवायु क्षेत्रों में धान और गन्ने जैसी जल-गहन फसलों की खेती ने संसाधन की कमी को और तेज कर दिया है।

- **आर्थिक अनिश्चितता और बुनियादी ढाँचे की कमी:**

- किसानों को बाजार कीमतों में उतार-चढ़ाव, अपर्याप्त भंडारण बुनियादी ढाँचे, फसल कटाई के बाद के नुकसान और बिचौलियों पर निर्भरता के कारण आर्थिक अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ता है।
- संस्थागत ऋण और कृषि बीमा तक पहुँच अभी भी असमान है, जिससे ऋणग्रस्तता और वित्तीय असुरक्षा बढ़ती है।

### **सतत कृषि प्रथाओं की आवश्यकता:**

इस संदर्भ में, सतत कृषि प्रथाएँ अनिवार्य हो गई हैं। सतत कृषि का उद्देश्य पारिस्थितिक संतुलन और प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करते हुए उत्पादकता सुनिश्चित करना है:

- **विविधीकरण और जैविक तरीके:** फसल विविधीकरण (crop diversification), जैविक खेती (organic farming), एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) और सूक्ष्म सिंचाई (micro-irrigation) पर्यावरणीय तनाव को कम करते हैं और दीर्घकालिक उत्पादकता बढ़ाते हैं।
- **खाद्य और पोषण सुरक्षा:** जलवायु-अनुकूल खेती (climate-resilient farming) तथा मोटे अनाजों (millets) और दालों को बढ़ावा देने से पानी की निर्भरता कम होने के साथ-साथ खाद्य और पोषण सुरक्षा मजबूत हो सकती है।

### निष्कर्ष (Conclusion)

- भारतीय कृषि का भविष्य केवल उत्पादन बढ़ाने पर नहीं, बल्कि पारिस्थितिक स्थिरता और किसान कल्याण सुनिश्चित करने पर निर्भर करता है।
- सतत कृषि प्रथाएँ एक ऐसा संतुलित मार्ग प्रदान करती हैं जो उत्पादकता, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास को एकीकृत करता है। इसलिए, स्थिरता (sustainability) को भारत में कृषि नीति का मार्गदर्शक सिद्धांत बनना चाहिए।

### GS-2

- **स्रोत:** कक्षा 12 राजनीति विज्ञान – स्वतंत्र भारत में राजनीति
- **अध्याय 3:** नियोजित विकास की राजनीति

**प्रश्न 2:** स्वतंत्रता के बाद के भारत में नियोजित विकास (planned development) की भूमिका का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए और समकालीन युग में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन कीजिए।

### परिचय (Introduction)

- स्वतंत्रता के समय, भारत को विरासत में एक ऐसी अर्थव्यवस्था मिली थी जो गरीबी, कम औद्योगिकीकरण, बेरोजगारी और क्षेत्रीय असमानताओं से ग्रस्त थी।
- राष्ट्रीय नेतृत्व ने दुर्लभ संसाधनों को राष्ट्र-निर्माण और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन की ओर निर्देशित करने के लिए नियोजित विकास को आवश्यक माना। परिणामस्वरूप, भारत ने एक नियोजित आर्थिक मॉडल अपनाया जिसमें राज्य (सरकार) ने विकास में अग्रणी भूमिका निभाई।

### मुख्य भाग (Body)

नियोजित विकास ने आधुनिक भारत को आकार देने में एक आधारभूत भूमिका निभाई। इसके प्रमुख योगदान और सीमाएँ निम्नलिखित हैं:

**नियोजित विकास का योगदान:**

- **बुनियादी ढाँचे का सुदृढीकरण:** योजना आयोग और पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से, राज्य ने औद्योगिकीकरण को गति देने और आर्थिक आत्मनिर्भरता को मजबूत करने का प्रयास किया। भारी उद्योगों, बिजली उत्पादन, सिंचाई परियोजनाओं और परिवहन नेटवर्क में महत्वपूर्ण निवेश किए गए।
- **सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार:** सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (PSUs) औद्योगिक विकास और बुनियादी ढाँचे के विस्तार के साधन बने। स्टील प्लांट, बांध और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों जैसे संस्थानों ने भविष्य के विकास के लिए आर्थिक आधार तैयार किया।
- **कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा:** योजना ने कृषि विकास में भी पर्याप्त योगदान दिया। शुरुआती कृषि नीतियों और बाद में हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि की तथा आयात पर निर्भरता को कम किया। इस उपलब्धि ने खाद्य सुरक्षा को बढ़ाया और राष्ट्रीय आत्मविश्वास को मजबूत किया।
- **सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय संतुलन:** राज्य ने भूमि सुधारों, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों और पिछड़े क्षेत्रों में सार्वजनिक निवेश के माध्यम से असमानता को कम करने का प्रयास किया। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और कल्याणकारी पहलों ने आर्थिक विकास से इतर व्यापक विकासात्मक उद्देश्यों को प्रतिबिंबित किया।

#### नियोजित विकास की सीमाएँ:

- **ब्यूरोक्रेटिक नियंत्रण:** 'लाइसेंस-परमिट राज' से जुड़े अत्यधिक नौकरशाही नियंत्रण ने अक्सर अक्षमता और भ्रष्टाचार को जन्म दिया।
- **कम उत्पादकता:** कई क्षेत्रों में सार्वजनिक उद्यम कम उत्पादकता और वित्तीय नुकसान से पीड़ित रहे। शुरुआती दशकों के दौरान आर्थिक विकास दर मामूली रही, जिससे आलोचकों ने तर्क दिया कि अत्यधिक राज्य हस्तक्षेप ने नवाचार और निजी उद्यम को बाधित किया।

#### समकालीन युग में प्रासंगिकता:

1991 के बाद आर्थिक उदारीकरण ने बाजार-उन्मुख सुधारों की शुरुआत की और प्रत्यक्ष राज्य नियंत्रण को कम कर दिया। बहरहाल, योजना की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है:

- **समकालीन चुनौतियाँ:** जलवायु परिवर्तन, बुनियादी ढाँचे की कमी, सार्वजनिक स्वास्थ्य, शहरीकरण और क्षेत्रीय असमानताओं जैसी वर्तमान चुनौतियों के लिए समन्वित नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता है।
- **नीति आयोग की भूमिका:** नीति आयोग जैसे संस्थान केंद्रीकृत योजना से हटकर सहकारी (cooperative) और रणनीतिक योजना (strategic planning) की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

#### निष्कर्ष (Conclusion)

- भारत का विकासात्मक अनुभव यह दर्शाता है कि योजना (planning) और बाजार (market) को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

- जहाँ बाजार दक्षता और नवाचार को बढ़ावा देते हैं, वहीं सामाजिक न्याय, स्थिरता और दीर्घकालिक राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के लिए योजना आज भी आवश्यक बनी हुई है। इसलिए, नियोजित विकास एक बदलते रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखता है।

### GS-3

- **स्रोत:** कक्षा 12 अर्थशास्त्र – समष्टि अर्थशास्त्र (Introductory Macroeconomics)
- **अध्याय 4:** सरकारी बजट और अर्थव्यवस्था

**प्रश्न 3:** आर्थिक विकास में सरकारी बजट (government budgeting) के महत्व की व्याख्या कीजिए। राजकोषीय नीति (fiscal policy) संवृद्धि (growth) और कल्याण (welfare) के उद्देश्यों को कैसे संतुलित कर सकती है?

### परिचय (Introduction)

- सरकारी बजट केवल प्राप्तियों और व्यय का वित्तीय विवरण मात्र नहीं है, बल्कि यह आर्थिक शासन का एक शक्तिशाली साधन है।
- राजकोषीय नीति के माध्यम से सरकारें विकास, रोजगार, मुद्रास्फीति और आय के वितरण को प्रभावित करती हैं। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में, समावेशी और सतत विकास के उपकरण के रूप में बजट का विशेष महत्व है।

### मुख्य भाग (Body)

सरकारी बजट आर्थिक विकास में कई तरीकों से योगदान देता है:

- **संसाधनों का आवंटन और बुनियादी ढाँचा निर्माण:**
  - सड़कों, रेलवे, बंदरगाहों और ऊर्जा प्रणालियों जैसे बुनियादी ढाँचे पर सार्वजनिक व्यय उत्पादक संपत्तियों का निर्माण करता है और आर्थिक गतिविधियों को गति देता है।
  - ऐसा निवेश निजी निवेश को प्रोत्साहित करके और रोजगार के अवसरों का विस्तार करके 'गुणक प्रभाव' (multiplier effects) पैदा करता है।
- **पुनर्वितरण और सामाजिक कल्याण:**
  - बजटीय नीति एक महत्वपूर्ण पुनर्वितरण भूमिका भी निभाती है। प्रगतिशील कराधान (progressive taxation) और कल्याणकारी व्यय सरकारों को सामाजिक-आर्थिक असमानता को दूर करने और कमजोर आबादी का समर्थन करने में सक्षम बनाते हैं।
  - शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, पोषण और सामाजिक सुरक्षा पर खर्च मानव पूंजी निर्माण में योगदान देता है और दीर्घकालिक उत्पादकता बढ़ाता है।

### • समष्टि आर्थिक स्थिरता (Macroeconomic Stabilisation):

- आर्थिक मंदी के दौरान, बढ़े हुए व्यय और कम कराधान वाली 'विस्तारवादी राजकोषीय नीति' (expansionary fiscal policy) मांग को प्रोत्साहित कर सकती है और रोजगार का समर्थन कर सकती है।
- इसके विपरीत, मुद्रास्फीति (महंगाई) की अवधि के दौरान, सरकारें आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए संकुचनकारी उपाय (contractionary measures) अपना सकती हैं।

### राजकोषीय नीति के समक्ष चुनौतियाँ और संतुलन के उपाय:

बजट निर्माण में कठिन समझौतों (trade-offs) का सामना करना पड़ता है। अत्यधिक राजकोषीय घाटा सार्वजनिक ऋण, मुद्रास्फीति के दबाव और ब्याज के बोझ को बढ़ा सकता है। उच्च गैर-उत्पादक व्यय से उत्पन्न होने वाला राजस्व घाटा विकासात्मक निवेश के दायरे को कम कर सकता है। अतः संवृद्धि और कल्याण को संतुलित करने के लिए विवेकपूर्ण राजकोषीय प्रबंधन की आवश्यकता है:

- **उत्पादक पूंजीगत व्यय:** अनुत्पादक सब्सिडियों के बजाय उत्पादक पूंजीगत व्यय (capital expenditure) और लक्षित कल्याणकारी कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी का उपयोग:** 'प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण' (DBT) जैसे प्रौद्योगिकी-संचालित तंत्र लीकेज (रिसाव) को कम कर सकते हैं और सब्सिडी की दक्षता में सुधार कर सकते हैं।
- **राजकोषीय पारदर्शिता:** राजकोषीय पारदर्शिता, जवाबदेही और परिणाम-आधारित बजट (outcome-based budgeting) यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सार्वजनिक व्यय मापने योग्य विकासात्मक परिणाम प्रदान करे।

### निष्कर्ष (Conclusion)

- सरकारी बजट एक महत्वपूर्ण विकासात्मक साधन के रूप में कार्य करता है जो विकास और सामाजिक न्याय दोनों को बढ़ावा देने में सक्षम है।
- एक संतुलित राजकोषीय रणनीति जो राजकोषीय विवेक के साथ विकासात्मक निवेश को जोड़ती है, स्थायी और समावेशी आर्थिक प्रगति का निर्माण कर सकती है।

### GS-4

- **विषय:** नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि (Ethics, Integrity and Aptitude)

**प्रश्न 4:** 'सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा (integrity) केवल दक्षता (efficiency) से अधिक महत्वपूर्ण है।' उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

### परिचय (Introduction)

- लोक प्रशासन तब सबसे प्रभावी ढंग से कार्य करता है जब वह योग्यता के साथ नैतिक आचरण को जोड़ता है। दक्षता का तात्पर्य संसाधनों के इष्टतम उपयोग के साथ लक्ष्यों को शीघ्रता से प्राप्त करने की क्षमता से है, जबकि सत्यनिष्ठा का अर्थ नैतिक मूल्यों, ईमानदारी और नैतिक सिद्धांतों के प्रति दृढ़ निष्ठा से है।
- यद्यपि सुशासन के लिए दोनों गुण आवश्यक हैं, लेकिन सत्यनिष्ठा अधिक मौलिक स्थान रखती है क्योंकि सार्वजनिक संस्थान अपनी वैधता केवल प्रदर्शन से नहीं बल्कि नैतिक और कानूनी आचरण से प्राप्त करते हैं।

### मुख्य भाग (Body)

सत्यनिष्ठा वह नैतिक आधार है जिस पर लोक प्रशासन टिका हुआ है:

- **सार्वजनिक विश्वास और संस्थागत विश्वसनीयता:**
  - लोकतांत्रिक शासन में, नागरिक लोक अधिकारियों को इस उम्मीद के साथ अधिकार और संसाधन सौंपते हैं कि वे जनहित में कार्य करेंगे।
  - यदि प्रशासक कुशल हैं लेकिन उनमें सत्यनिष्ठा की कमी है, तो शासन भ्रष्टाचार, पक्षपात और सत्ता के दुरुपयोग के प्रति संवेदनशील हो सकता है। ऐसा आचरण संस्थागत विश्वसनीयता को नुकसान पहुँचाता है और जनता के विश्वास को कमजोर करता है।
- **बिना सत्यनिष्ठा की दक्षता के दीर्घकालिक नुकसान:**
  - सत्यनिष्ठा के बिना दक्षता तात्कालिक परिणाम तो दे सकती है लेकिन इसके हानिकारक दीर्घकालिक परिणाम हो सकते हैं।
  - **उदाहरण:** एक अधिकारी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को तेजी से पूरा कर सकता है या फाइलों का शीघ्र निपटान कर सकता है, लेकिन यदि निर्णय रिश्तों या व्यक्तिगत हित से प्रभावित हैं, तो दक्षता के लाभ नैतिक रूप से समझौते का शिकार हो जाते हैं। सार्वजनिक खरीद (procurement), भर्ती, या कल्याणकारी वितरण में भ्रष्टाचार यह दर्शाता है कि सत्यनिष्ठा के अभाव में कुशल प्रणालियाँ भी कैसे अन्यायपूर्ण परिणाम दे सकती हैं।
- **कानून का शासन और निष्पक्षता:**
  - सत्यनिष्ठा कानून के शासन को मजबूत करती है और निर्णय लेने में निष्पक्षता सुनिश्चित करती है। नैतिक प्रशासक बाहरी दबावों का विरोध करते हैं, संवैधानिक सिद्धांतों को बनाए रखते हैं और निष्पक्ष निर्णय लेते हैं।
  - **उदाहरण:** आपदा प्रबंधन, कानून प्रवर्तन या कल्याणकारी वितरण जैसे संकटों के दौरान सत्यनिष्ठा का महत्व विशेष रूप से स्पष्ट हो जाता है, जहाँ अधिकार का दुरुपयोग कमजोर आबादी को गंभीर नुकसान पहुँचा सकता है।

## दक्षता और सत्यनिष्ठा का सह-अस्तित्व:

हालाँकि, सत्यनिष्ठा को दक्षता के विकल्प के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। ईमानदार लेकिन अक्षम शासन सार्वजनिक सेवाओं में देरी कर सकता है और कल्याणकारी परिणामों को कम कर सकता है। नागरिकों को नैतिक और सक्षम दोनों तरह के प्रशासन की आवश्यकता होती है। इसलिए, आदर्श लोक सेवक वह है जो व्यावसायिक दक्षता को नैतिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ता है।

## संस्थागत सुदृढ़ीकरण:

सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को बढ़ावा देने के लिए कई संस्थागत तंत्र काम कर सकते हैं:

- पारदर्शिता कानून (जैसे RTI), सोशल ऑडिट, विसलब्लोअर संरक्षण, नैतिक प्रशिक्षण और जवाबदेह नेतृत्व ऐसे माहौल का निर्माण करते हैं जो भ्रष्टाचार को हतोत्साहित करते हैं।
- इन सब में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका उदाहरण प्रस्तुत करने वाले नेतृत्व (leadership by example) की होती है जो प्रशासनिक संस्कृति को आकार देती है।

## निष्कर्ष (Conclusion)

- दक्षता शासन की क्षमता को बढ़ाती है, लेकिन सत्यनिष्ठा यह निर्धारित करती है कि उस क्षमता का उपयोग सार्वजनिक कल्याण और न्याय के लिए किया जा रहा है या नहीं।
- सार्वजनिक जीवन में, सत्यनिष्ठा केवल दक्षता से अधिक मौलिक है क्योंकि यह लोकतांत्रिक वैधता, जनता के विश्वास और संवैधानिक नैतिकता को बनाए रखती है। सबसे प्रभावी शासन तब उभरता है जब दक्षता, सत्यनिष्ठा के मार्गदर्शन में काम करती है।

## समसामयिकी (Current Affairs)

- **विषय:** दास एडम स्मिथ प्रॉब्लम (Das Adam Smith Problem)

**प्रश्न 5: 'दास एडम स्मिथ प्रॉब्लम' क्या है? समकालीन पूंजीवाद और नैतिकता पर होने वाली बहसों में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण कीजिए।**

## परिचय (Introduction)

- 'दास एडम स्मिथ प्रॉब्लम' (Das Adam Smith Problem) एक बौद्धिक बहस को संदर्भित करता है जो एडम स्मिथ के दो प्रमुख कार्यों—*द थ्योरी ऑफ मॉरल सेंटीमेंट्स* (The Theory of Moral Sentiments) और *द वेल्थ ऑफ नेशन्स* (The Wealth of Nations) में प्रस्तुत विचारों के बीच स्पष्ट अंतर्विरोध से संबंधित है।

- जहाँ एक कृति सहानुभूति, नैतिकता और नैतिक आचरण पर जोर देती है, वहीं दूसरी ओर बाजार के व्यवहार और स्व-हित (self-interest) को रेखांकित करती है। इस बहस ने अर्थशास्त्र और नैतिकता के बीच संबंधों के संबंध में महत्वपूर्ण चर्चाओं को जन्म दिया है।

### मुख्य भाग (Body)

इस विवाद की उत्पत्ति और वर्तमान आर्थिक परिदृश्य में इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत समझा जा सकता है:

#### विवाद की पृष्ठभूमि और स्पष्टीकरण:

- **विचारों में विरोधाभास:** यह विवाद मुख्य रूप से उन्नीसवीं सदी के जर्मन विद्वानों के बीच उभरा जिन्होंने तर्क दिया कि एडम स्मिथ ने मानव स्वभाव के दो परस्पर विरोधी विचार प्रस्तुत किए। *द थ्योरी ऑफ मॉरल सेंटीमेंट्स* में, स्मिथ ने मनुष्यों को सहानुभूति, नैतिक निर्णय और सामाजिक स्वीकृति की चिंता से प्रेरित बताया। व्यक्तियों को नैतिक अभिनेताओं के रूप में देखा गया जिनका आचरण अंतरात्मा और सामाजिक मानदंडों द्वारा आकार लेता था।
- **स्व-हित बनाम नैतिकता:** इसके विपरीत, *द वेल्थ ऑफ नेशन्स* ने आर्थिक विनिमय को स्व-हित के माध्यम से समझाया, जिसमें यह तर्क दिया गया कि व्यक्तिगत लाभ चाहने वाले व्यक्ति बाजार तंत्र (Invisible Hand) के माध्यम से समग्र आर्थिक समृद्धि में योगदान करते हैं।
- **आधुनिक विद्वानों का मत:** पहली नज़र में, ये दो दृष्टिकोण विरोधाभासी लगे। आलोचकों ने दावा किया कि स्मिथ नैतिक दर्शन से आर्थिक व्यक्तिवाद की ओर बढ़ गए, जिससे एक बौद्धिक विसंगति पैदा हुई। हालांकि, बाद के विद्वानों ने इस व्याख्या को काफी हद तक खारिज कर दिया और तर्क दिया कि कोई वास्तविक अंतर्विरोध नहीं था। स्मिथ ने कभी भी बिना किसी नियंत्रण के स्वार्थ का समर्थन नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने स्वीकार किया कि जहाँ स्व-हित आर्थिक गतिविधि को प्रेरित करता है, वहीं नैतिक भावनाएँ और संस्थाएँ मानवीय व्यवहार को विनियमित करती हैं तथा शोषण को रोकती हैं।

#### समकालीन पूंजीवाद और नैतिकता में प्रासंगिकता:

यह व्याख्या समकालीन पूंजीवाद और नैतिकता के इर्द-गिर्द घूमने वाली आधुनिक बहसों में अत्यधिक प्रासंगिकता रखती है:

- **पूंजीवाद की सीमाएँ:** आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ प्रतिस्पर्धा, लाभ के उद्देश्यों और बाजार प्रोत्साहनों पर भारी निर्भर हैं। इन तंत्रों ने समाजों में नवाचार, धन सृजन और गरीबी उन्मूलन में योगदान दिया है। हालांकि, लाभ की अनियंत्रित खोज ने असमानता, पर्यावरणीय क्षरण, श्रम शोषण और कॉर्पोरेट कदाचार को भी जन्म दिया है। वित्तीय संकट और कॉर्पोरेट घोटाले नैतिक जिम्मेदारी और संस्थागत निरीक्षण के बिना काम करने वाले बाजारों की सीमाओं को प्रकट करते हैं।

- **नैतिक दृष्टिकोण की वापसी:** कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR), पर्यावरण-सामाजिक-अभिशासन (ESG) ढांचे, स्टैकहोल्डर कैपिटलिज्म (stakeholder capitalism) और सतत व्यावसायिक मॉडलों पर वर्तमान चर्चाएँ स्मिथ के व्यापक नैतिक दर्शन की ही प्रतिध्वनि हैं। आज व्यवसायों से न केवल शेयरधारकों के मुनाफे को अधिकतम करने की बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को बनाए रखने की भी अपेक्षा की जाती है।

### निष्कर्ष (Conclusion)

- 'दास एडम स्मिथ प्रॉब्लम' हमें याद दिलाती है कि अर्थशास्त्र और नैतिकता अलग-अलग क्षेत्र नहीं हैं बल्कि सामाजिक जीवन के परस्पर जुड़े हुए आयाम हैं।
- एडम स्मिथ के विचार बताते हैं कि बाजार सबसे प्रभावी ढंग से तब काम करते हैं जब वे नैतिक मानदंडों, न्याय और जिम्मेदार संस्थानों द्वारा समर्थित हों। इसलिए, समकालीन पूंजीवाद को सतत और न्यायसंगत विकास सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता को नैतिक जिम्मेदारी के साथ संतुलित करना चाहिए।

